TDC-1st (H)

समाजशास्त्र और मानवशास्त्र
(Sociology and Anthropology)

समाजशास्त्र और मानवशास्त्र के बीच एक गहरा संबंध है। हर्सकोविट्स ने कहा है कि मानवशास्त्र मनुष्य एवं उनकी कृतियों का अध्ययन है। मनुष्यों की कृतियों में भौतिक और अभौतिक दोनों प्रकार की संस्कृति आती है। मानवशास्त्र में मनुष्यों का उद्विकास एवं मानव द्वारा निर्मित संस्कृति, सभ्यता आदि का अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्र में भी मानव समाज और उसकी संस्कृति का अध्ययन किया जाता है। इन दोनों विषयों में ही मानव समूहों के अन्तः संबंधों का अध्ययन किया जाता है। मानवशास्त्री एवं समाजशास्त्री अपने अध्ययन में एक-दूसरे विषय की अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों का उपयोग करते है। मानवशास्त्र के अन्तर्गत मुख्य रूप से छोटी इकाई वाले समुदायों का अध्ययन किया गया है।

जबकि समाजशास्त्र के अन्तर्गत आधुनिक और जटिल समाजों पर अधिक बल दिया गया है। मानवशास्त्र में आदिवासियों का अध्ययन अधिक प्रचलित है। आदिवासी समाज में धर्म, जादू, कला, विवाह, परिवार नातेदारी व्यवस्था आदि मानवशास्त्रियों के विचार का मुख्य केन्द्रबिन्दु है। इसके विपरीत समाजशास्त्रियों के लिए मुख्य रूप से सामाजिक अन्तःक्रिया एवं उनसे उत्पन्न सामाजिक संबंधों पर अपना ध्यान केन्द्रित किए है।

क्रोबर के अनुसार :—

"समाजशास्त्र और मानवशास्त्र जुड़वा बहिनें है।"

समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र की दो शाखाओं - सांस्कृतिक एवं सामाजिक मानवशास्त्र द्वारा सामाजिक संरचना, सामाजिक संगठन, सामाजिक संस्थाएं, धर्म आदि का अध्ययन किया जाता है। अर्थात दोनों की विषय-वस्तु सामान्य है। लेकिन परिप्रेक्ष्य अलग-अलग है। संस्कृति के विज्ञान के रूप में मानवशास्त्र समाजशास्त्र के काफी निकट है। किसी भी समाज के संबंध में यथार्थ जानकारी प्राप्त करने के लिए उस समाज की संस्कृति को समझना अत्यन्त आवश्यक है। भारतीय समाज न तो आदिम समाजों के समान पूरी तरह पिछड़ा हुआ है और न ही औद्योगिक समाजों के समान पूर्णतः विकसित। ऐसे समाजों में समाजशास्त्र व मानवशास्त्र घनिष्ठरूप से परस्पर एक दूसरे से संबंधित है।

Smita Kumari
Guest teacher